प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 2.2.68

ओमशांति। रुहानी बाप रुहानी बच्चों साथ रुह–रुहान कर रहे हैं। यह तो सभी आत्माएं जानती हैं कि एक ही हमारा बाप और शिक्षा भी देते हैं। टीचर का काम है शिक्षा देना। गुरू का काम है मंजिल बताना। मंजिल को तो बच्चे समझ गए हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति के लिए याद की यात्रा बहुत जरूरी है और रचना के आदि, मध्य ,अंत को भी जानना जरूरी है। है दोनों सहज। 84जन्मों का चक्र भी फिरता रहता है। यह याद रहना चाहिए। अभी हमारा 84का चक्र पूरा हुआ है। अब वापस जाना है ;परंतु आत्माएं मुक्ति–जीवनमुक्ति में जाय न सके। जब तक कि पावन न बनें। ऐसे2 अपने साथ विचार–सागर–मंथन करना है। जो करेंगे वही पावेंगे। खुशी में भी वही आवेंगे और दूसरों को भी खुशी में ले आवेंगे। औरों पर भी कृपा करनी है रास्ता बताने की। तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह भी कोई को याद रहता है ,कोई को नहीं। भूल जाते हैं। यह भी याद रहे तभी भी खुशी का पारा चढ़े। बाबा टीचर, सदगुरू के रूप में याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़े ; परंतु चलते2 बीच में रोला पड़ जाता है। किसको थोड़ा किसको बहुत। पड़ता जरूर है। पहाड़ों पर नीचे–उपर जाना होता है ना। बच्चों की अवस्था भी ऐसे होती है। कोई बहुत उंचे चढ़ते हैं,फिर गिरते हैं तो आगे से भी जास्ती गिर पड़ते हैं। की हुई कमाई चट हो जाती है। भल कितना भी दान–पुण्य करते हैं तो पुण्यात्मा बने। वह पुण्य करते2 फिर पाप करने लग पड़ते हैं तो वह पुण्य भी खतम हो जाता है। सबसे बड़ा पुण्य तो यह है बाप को याद करना। याद से ही पुण्यात्मा बनेंगे। अगर भूल ही भूल जाये, दूसरों का संग लग जाये तो पाप करने से वह पुण्य भी खतम हो जाता। ऐसे नहीं पुण्य जो किया है सो जमा रहेगा। नहीं। पाप करने से फिर वह पुण्य भी एक्युएल हो जाता है। इससे कमती भी हो जाता। समझो कल दान–पुण्य करते,सेंटर खोलते ,कल फिर बेमुख हो जाते हैं तो आगे से भी जास्ती नीचे गिर जाते। फिर वह खाता जमा रहेगा नहीं। घाटा हो जावेंगे। पाप का काम करने से घाटा होता जावेगा। बहुत पाप खाते चढ़ जाते हैं। मुरादी सम्भाली जाती है ना। बाप कहेंगे तुम्हारा खाता पुण्य का था फिर पाप करने से सौणा हो जाता है। बाकी क्या रहा? और ही खाते में पड़ जावेगा। पाप कोई बहुत कड़ा ,कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा। क्रोध सेकंड ग्रेड , लोभ इनसे कम, मोह फिर इनसे कम। सबसे जास्ती काम के बस होने से जो जमा हुआ वह भी नाई हो जाता। फायदे बदली और ही नुकसान हुआ। सदगुरू के निंदक ठौर न पाये। बाप का बनकर फिर छोड़ देते हैं। कारण क्या हुआ? अक्सर करके काम की चोट लगती है। यह है कड़ा दुश्मन। इनकी ही एफजी बनाते हैं। क्रोध वालों का ...एफजी नहीं बनावेंगे। इसी काम पर ही पूरी जीत पानी है। काम पर जीत पाई तो जगतजीत बन जावेंगे। ऐसे नहीं कि क्रोध, लोभ पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। मुख्य बात काम की है। बुलाते भी हैं हम जो रावणराज्य में पतित बने हैं अब पावन बनाओ। मनुष्यों को इनसे कितनी प्रीत होती है। बाप कहते हैं काला मुंह किया तो कुल कलंक लगाया। क्रोध, लोभ के लिए ऐसे कड़े अक्षर कब नहीं कहेंगे। सारा काम पर है। पतित ही बाप को बुलाते हैं। विकार में जाने वालों को ही पतित कहा जाता है। गाते तो सभी हैं पतित पावन.....हे पतितों को पावन बनाने वाले सभी सीताओं के राम आओ। यह अर्थ समझते नहीं हैं। यह भी समझते हैं बाप जरूर नई दुनियां ही स्थापन करने आवेंगे ;परंतु बहुत टाइम देने से घोर अंधियारे में हो गये। ज्ञान और अज्ञान है ना। अज्ञान है भक्ति। जिसकी पूजा करते हैं उनको जानते ही नहीं। तो उनके पास पहुंचे कैसे? इसलिए दान–पुण्य आदि सब निष्फल हो जाता है। करके कुछ मिलता भी है तो अल्पकाल कागविष्टा समान सुख मिलता है। बाकी तो दुःख ही दुःख है। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। अब देखना है हम कितना याद करते हैं। जो पुराना खतम हो ,नया जमा हो। कोई तो कुछ भी जमा नहीं करते। यह सारी याद की बात है। याद बिगर पाप कैसे मिटे? पवित्र कैसे बने? ऐसे भी नहीं इस जन्म में याद करते हैं तो पाप भस्म हो जावेंगे। नहीं। पाप तो बहुत हैं जन्म–जन्मांतर के। इस जन्म के

जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म–जन्मांतर के पाप थोड़े ही कट जावेगा। सिर्फ इस जन्म की हल्काई होती है। बाकी तो बहुत मेहनत करनी पड़े। इतने जन्मों का हिसाब–किताब इकट्ठा हुआ है। वह योगबल से चुक्तू करना है। विचार करना चाहिए हमारा योगबल कितना है। हमारा जन्म सतयुग आदि में हो सकेगा। जो बहुत पुरुषार्थ करते हैं वही सतयुग के आदि में जन्म ले सकेंगे। वह छिपे नहीं रहेंगे। सभी तो समझ न सके। हम सतयुग आदि में आवेंगे। नहीं। पिछाड़ी में जाकर थोड़ा पद पाते हैं। अगर पहले आते भी हैं तो नौकरी करते हैं। यह तो कॉमन बात है समझने की। इसलिए बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। तुम बच्चे समझते हो हम यह विश्व के मालिक बनने आये हैं। जो याद करेंगे उनको खुशी जरूर रहेगी। जितना याद की यात्रा में रहेंगे। राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी पड़े। नही तो कैसे समझेंगे कि हम राजा बनेंगे। जो सेंटर खोलते हैं, सर्विस करते हैं उनकी भी तो कमाई होती है ना। इनमें भी बहुतों को फायदा मिलता है। तो उसका फल मिल जाता है। कोई तीन/चार सेंटर खोलते हैं ,दिल में रहता है ना इसने सेंटर खोली है। बाबा को लिस्ट निकाल दो कि किस2 ने डायरैक्ट सेंटर खोला है। बाबा भी सेंटर खोलते हैं ना। जो2 करते हैं उनका हिस्सा तो आता है ना। मिलकर माया के दुःख का छप्पर उठाते हो। तो इसमें कुल्हा सब देते हैं। सबको मिलता तो है ना। जो बहुतों को रास्ता बताते हैं ,जितना मेहनत करते हैं तो वह उंच पद भी पाते हैं। उनको खुशी भी बहुत होगी। दिल जानते हैं हम कितने को समझाया। कितने का उद्धार किया। सब कुछ करने का समय तो यही है। खान–पान भी तो सबको ठीक मिलता ही है। कोई तो कुछ भी काम नहीं करते हैं ,ऐसे ही चलते रहते हैं। कोई भल कुछ भी नहीं देते हैं ; परंतु सर्विस बहुत अच्छी करते हैं। जैसे मम्मा कितनी सर्विस की। सर्विस से ही उनका बहुत कल्याण हो गया। इसमें भी सर्विस डबल चाहिए। योग की भी सर्विस है ना। कितनी डबल डायरैक्शन मिलती रहती है। आगे बाबा बिंदी2 थोड़े ही कहते थे। अभी तो आगे चल पता नहीं क्या2 प्वाइंट्स निकलेंगे। दिन–प्रतिदिन उन्नति होती जावेगी। नये2 प्वाइंट्स निकलते रहेंगे। जो सर्विस में तत्पर रहते हैं वह झट पकड़ लेते हैं। जो सर्विस ही नहीं करते तो उनकी बुद्धि में कुछ बैठेगा नहीं। बिंदी कैसे समझूं?बिंदी2 करते2 ही प्राण निकल जावेंगे। तुम कोई से भी पूछो आत्मा कितनी बड़ी है? आत्मा का नाम, रूप ,देश ,काल बताओ। कब नहीं बता सकेंगे। मनुष्य परमात्मा का नाम,रूप ,देश–काल पूछते हैं। तुम आत्मा का उनसे पूछो तो भी मूंझ जावेंगे। किसको भी यह थोड़े ही पता है आत्मा इतनी छोटी बिंदी है। उनमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। यहां भी बहुत हैं जो आत्मा–परमात्मा को बिल्कुल ही नहीं जानते। ऐसे ही बाबा के पास आकर पड़े हैं। जैसे अवधूत होते हैं ना। कुछ भी समझते नहीं। बाकी विकार से छूटे, सन्यास धारण किया है यह भी कमाल है। सन्यासियों का तो धर्म ही अलग है। यह ज्ञान तुम्हारे लिए ही है। बाप समझाते हैं तुम पवित्र थे। अब अपवित्र बने हो। फिर पवित्र बनना है। तुम्हारे ही 84जन्म हैं। कैसे चक्र लगाते हो। यह बुद्धि तुमको मिली है। दुनियां में तो जरा भी इन बातों को नहीं जानते। ज्ञान बिल्कुल अलग है। भक्ति अलग है। ज्ञान चढ़ाते हैं, भक्ति गिराते हैं। तो रात–दिन का फर्क हो गया ना। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। भल कितना भी वेदों–शास्त्रों की अथॉर्टी अपन को समझते हैं ;परंतु जरा भी पता नहीं है भक्ति क्या है, ज्ञान क्या है। तुमको भी अभी मालूम पड़ा है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। भूलने कारण ही खुशी कम हो जाती है। नहीं तो अथाह खुशी रहनी चाहिए। बाप से हमको यह वर्सा मिल रहा है। बाप सा0 कराय देते हैं। सा0 किया ;परंतु श्रीमत पर न चले तो फायदा ही क्या? बाप को कहते ही हैं रहम करो, लिबरेट करो। दुःख में ही सिमरण करेंगे। हे प्रभु, हे राम ;परंतु प्रभु कौन है यह भी नहीं जानते। तुम तो अच्छी रीत जानते हो। भक्तिमार्ग में ऐसे कोई थोड़े ही कहेंगे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बिल्कुल नहीं। अगर कहते हो तो परम्परा चला आये। भक्ति तो चली आती है....। अथाह भक्ति है। ज्ञान तो है ही एक। किसम2 के ढेर हैं। मनुष्य समझते हैं भक्ति से भगवान मिलेगा।

कैसे ,कब मिलेगा कुछ भी पता नहीं। भक्ति कब से शुरू होती है, कौन जास्ती भक्ति करते हैं यह भी कोई को पता नहीं। क्या इतना 40हजार वर्ष ही भक्ति करते रहेंगे। मनुष्य कितना अंधियारे में हैं। अब एक तरफ भक्ति हो रही है, दूसरे तरफ तुम ज्ञान पाय रहे हो। मनुष्यों से कितना माथा मारना पड़ता है। इतने प्रदर्शनी ,म्यूजियम आदि करते हो। फिर भी कोटों में कोउ ही निकलते हैं। कितने को आप समान बनाकर भी ले आते हो। बच्चा कहे तो भी सच्चे2 ब्राह्मण कितने हैं ;परंतु वह हिसाब अभी निकाल नहीं सकते हैं। बहुत झूठे भी हैं। ब्राह्मण .... लोग कथा सुनाते हैं। बाबा गीता की कथा सुनाते हैं। तुम भी सुनाते हो। यथा बाबा तथा बच्चे। बच्चों का भी काम है सच्ची2 गीता सुनाना। शास्त्र तो सबके हैं। वास्तव में जो भी शास्त्र ,बाईबल आदि2 हैं वह सभी हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान का पुस्तक तो एक ही गीता है। गीता माई–बाप है। बाप ही आकर सबकी सदगति करते हैं। यह भी तुम लिख सकते हो। सदगति करने वाला एक ही बाप है। बाकी सभी हैं दुर्गति करने वाले। तुम बाप की ही बड़ाई करते हो। शिवबाबा की जयंति ही हीरे जैसा है। बाकी सभी जयंतियां हैं कौड़ी मिसल। कहेंगे नेहरू के इतना मनाते हैं, वह तो कुछ भी नहीं। उंच ते उंच भगवान ही सदगतिदाता है। बाकी और सभी दुर्गति में पड़े हुए हैं। इन्हों की महिमा कैसे हो सकती महिमा देवताओं की जाती है वा कलियुगी मनुष्यों की? देवता बनाने वाला तो एक ही बाप है। ऐसे2 रेस्पांड भी वह कर सकते हैं जो समझते हैं। ठीक रेस्पांड न कर सकते हैं तो सबकी आबरू चली जाती है। कहेंगे ब्रह्माकुमारियां देखो हमारा कन्सट्रक्शन भी है, डिस्ट्रक्शन भी है। कन्सट्रक्शन कारीगरों साथ ,डिस्ट्रक्शन होता है हजारों से। ढेर हैं। जिनको कहां भी भेजा नहीं जा सकता। खुद भी समझते हैं हम तो किसको समझाय न सकेंगे। जानते ही नहीं। अच्छा समझाय नहीं सकते हैं तो फिर स्थूल काम। मिलिट्री में सब काम करने वाले होते हैं। गाया भी जाता है पढ़े आगे अनपढ़े भरी ढोते हैं। न पढ़ेंगे ,न पढ़ावेंगे , न स्थूल काम करेंगे तो बाकी क्या काम के? गधा भी नहीं कहेंगे। गधा तो फिर भी काम करते हैं। उनके लिए उठपक्षी(उंटपक्षी) नाम अच्छा है। पूछते हैं सबसे अच्छे ते अच्छा क्या करना चाहिए यह ल0ना0 बनने लिए? देखो ,मम्मा–बाबा, अनन्य क्या करते हैं? वह सीखो। इसमें पूछने की क्या दरकार है? आपे भी समझ सकते हो। बाबा से पूछो होशियार ते होशियार कौन है? बाबा कहेंगे फलाने को फॉलो करो। जो सर्विसेबुल ही नहीं उनसे क्या सीखेंगे? वह तो और ही टाइम वेस्ट करेंगे। बाबा रोज समझाते रहते हैं अपनी उन्नति करनी है तो यहां तुम बहुत अच्छी कर सकते हो। चित्र तो रखे हैं। हमने 84जन्म कैसे लिए हैं, यह अब समझ फिर दूसरों को भी समझाओ। कितना सहज है। यह बनना है इस पुरुषार्थ से। कल भक्ति में माथा टेकते थे। आज नहीं ;क्योंकि नालेज मिल गई है। ऐसे बहुत आकर नालेज लेंगे। जितना जास्ती तुम सेंटर का घेराव डालेंगे तब बहुत समझेंगे। औरों को समझाना है। तो यह पुरुषार्थ करो। सुनने से ही खुशी का पारा चढ़ जावेगा। सच्ची सत्य ना0 की कथा यह है। भक्ति से तो गिरते ही जाते हैं। ज्ञान का पता ही नहीं। ऐसे भी नहीं कह सकते कृष्ण से ज्ञान मिलता है। फिर कब कैसे, किसको मिला था कुछ भी पता नहीं। तुमको बेहद का बाप समझाते हैं। बाप कहते हैं कल तुमको समझाय .... राजाई दी, फिर वह राजाई कहां की? यह तो खुद ही जानते हैं कि यह खेल है। एक ही बाप सारे खेल का राज़ बताते हैं। हम कहते हैं बाबा आप तो बांधेली हो ड्रामा में। आपको (आना) ही पड़े पतित दुनियां पतित शरीर में। ईश्वर की बहुत महिमा करते हैं। अब तो कहेंगे बाबा हमने आपको बुलाया है तो आप आ गए हो पुरानी दुनियां में। हमारी सर्विस कर रहे हो पतित से पावन बनाने। कल्प2 हम सो देवता बनाय आप चले जाते हो। यह कहानी है जैसे कि होशियार बच्चों के लिए। बाकी तो जैसे भूटू हैं। तो (बच्चों) को खुशमिजाज होना चाहिए। बाप भी ड्रामा अनुसार सर्वेंट बना है। कोई2 कितना तंग करते हैं। अपन को आत्मा समझ श्रीमत पर चलो। देहाभिमान छोड़ो। वहां शरीर भी नया मिलेगा। बाप कहते हैं इस पर विचार करो। एमऑब्जेक्ट सामने है। हम यहां आये हैं यह बनने लिए। अच्छा ,मीठे2 बच्चों को रुहानी बाप गुडमार्निंग । नमस्ते।